हिंदी काव्य में स्त्री विमर्श

डॉ. माया सगरे , सहायक आचार्य, कला एवं मानविकी विभाग,
रेवा विश्वविद्यालय, बेंगलुरु
9449987351, mayalakka20@gmail.com

सारांश -

स्त्री - विमर्श हजारों वर्षो से चले आ रहे रूढ़ि - परंपरा, धार्मिक वर्जनाओ, जो स्त्री विरोधी स्त्री का दलन करनेवाले स्त्री को गुलाम बनाकर चार दीवारों में कैद करके रखनेवाली परंपरा का विरोध करनेवाली विचारधारा है | हिंदी काव्य में स्त्री विमर्श की शुरुवात छायावाद काल से मानी जाती है | जिसमें महादेवी वर्मा की श्रृंखला की कड़िया नारी सशक्तिकरण का सुन्दर उदहारण है जिसमें नारी जागरण एवं मुक्ति के सवाल को उठाया गया है | " ऐसा साहित्य जिसमें स्त्री समस्याओं का चित्रण हो 'स्त्री विमर्श' कहलाता है|" वैसे तो छायावाद से पहले भी स्त्री की समस्याओं को लिखने का प्रयास लिखने के साथ अन्य कवियोने ने भी किया था किन्तु उन्हें इतनी सफलता नहीं मिली जितनी स्त्री लेखिकाओं से मिली | नारी सशक्तिकरण १९६० से अधिक मुखरित हुआ | उषा प्रियंवदा , कृष्ण सोबती, मन्नू भंडारी एवं शिवानी इन लेखिकाओं ने स्त्री के मन की अन्तर्दशा, अन्तर्द्वन्द्व को जाना - पहचाना और लिखना आरम्भ किया | जो लोगों के दिलों तक पहुँच गया |

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते तत्र तेवतः|
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तता तत्र क्रिया |

अर्थात, जहाँ नारी की पूजा होती है वहां साक्षात् परमात्मा का निवास होता है किन्तु जहाँ नारी की पूजा नहीं होती वहां के सारे कर्म अस्तमात होते है |

जिस प्रकार एक सिक्के के दो पहलू होते है उसी प्रकार समाज के भी दो पहलू होते है, - स्त्री और पुरुष - जो एक-दूसरे के पूरक होते है | मानो उन दोनों का एक दूसरे के बिना कोई अस्तित्व ही नहीं है | शुरू में स्त्री - पुरुषों की समानता का आंदोलन रहा जिसे 'नारीवाद' कहा जाता है | जिसे अंग्रेजी मैं 'फेमिनिज्म' शब्द प्रचलित है | यह आंदोलन राजनितिक, सामाजिक और शैक्षिक समानता का आंदोलन है | नारीवाद की विभिन्न परिभाषाएँ हैं | जैसे

- "'नारीवाद' आंदोलन एकजुटता हैं जिसका उद्देश्य महिलाओं के लिए समान राजनैतिक, आर्थिक और सामाजिक अधिकारों की रक्षा को परिभाषित एवं स्थापित करना हैं साथ ही उन्हें शिक्षा और रोजगार के अवसर मुहैया करना हैं | "

"नारीवाद वर्त्तमान में मौजूद पुरुष या महिला या दोनों को बदलने का प्रयास भर नहीं हैं, यह प्रयास हैं उन दोनों के बीच सम्बन्धो को बदलने का |"

" नारीवाद की सर्वसामान्य कोई परिभाषा देना मुश्किल काम हैं, यह सवाल हैं राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक संस्थाओ के सोचने के तरीके और उन विचारों की अभिव्यक्ति का हैं| "

स्त्री किसी की गुलाम नहीं , उसे भी समान अधिकार होना चाहिए, इस बात का अहसास होते ही उसकी सोच सम्पूर्ण रूप से परिवर्तित हुई | इस दिशा मैं उसकी सोच मुक्ति का लक्षण रही | किन्तु इस प्रकार के प्रतिरोध करने के लिए जैसे ही उसने कदम उठाया - उसे कुलटा, डायन, बदचलन, व्याभिचारिणी आदि कहकर बदनाम कर दिया गया | इस विचारधारा में परिवर्तन लाने के लिए शिक्षित नारियों को आंदोलन करना पड़ा | जो आज 'स्त्री विमर्श' के रूप में नज़र आता है |

नारी की दयनीय और सोचनीय दशा को देखकर स्वामी विवेकानंद कहते हैं - "स्त्रियों की अवस्था को सुधरे बिना जगत के कल्याण की कोई सम्भावना नहीं हैं | पक्षी के लिए एक पंख से उड़ना संभव नहीं हैं |" अर्थात देश और समाज की भलाई महिला समाज के तरक्की के बगैर असंभव हैं | जिस भारत में वैदिक काल में ' यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते तत्र रमन्ते देवता' कहा जाता था वही नारी का शोषण होने लगा | मीराबाई कहती है –

ए री में तो प्रेम दीवानी , मेरा दर्द न जाने कोई
घायल कि गति घायल जाने, जो कोई घायल होय

तो यहां पर मैथिलीशरण गुप्त की स्त्री वेदना को लेकर अत्यंत प्रभावी पंक्तियाँ स्मरण होती हैं -

"अबला नारी है यही तुम्हारी कहानी ,
आँचल मैं हैं दूध और आंखों मैं हैं पानी "

महादेवी वर्मा कहती हैं, " स्त्री न घर का अलंकार मात्र बनकर जीवित रहना चाहती हैं, न देवता की मूर्ति बनकर प्राण प्रतिष्ठा चाहती हैं कारण वह जान गयी हैं की एक का अर्थ अन्य की शोभा बढ़ाना हैं तथा उपयोग न रहने पर फेंक दिया जाता हैं तथा दूसरे का अभिप्राय दूर से उस पूजापे का देखते रहना हैं , जिसे उसे न देकर उसी के नाम पर लोग बाँट लेंगे |"[1]

लेकिन वर्त्तमान में इस स्थिति में परिवर्तन नज़र आता हैं | २००१ में भारत को भारत सरकार ने महिलाओं का सशक्तिकरण वर्ष के रूप में घोषित किया | वास्तव मैं इस नवजागरण की शुरुवात १८१८ में राजाराममोहन रॉय ने की | उन्होंने सती प्रथा का विरोध किया | बाल-विवाह, विधवा विवाह और बहुपत्नी प्रथा के विरुद्ध लढाई की | निरन्तर राजाराममोहन रॉय स्त्री के पक्षधर नजर आते हैं | स्वामी विवेकानंद, स्वामी दयानन्द सरस्वती इन्होने शिक्षा पर जोर दिया | ज्योतिबा फुले और उनकी पत्नी सावित्रीबाई फुले इन्होने भी शिक्षा का महत्व समाज को दिया | स्त्री चेतना को जगाने के लिए सावित्रीबाई फुले ने कविताएँ भी लिखी |

१९ वीं सदी मैं विश्वभर में महिलाओं को समान अधिकार का संगठन बनाया | जिसमें महिलाओं को समान राजनीतिक अधिकार, आर्थिक अधिकार और समान शैक्षिक अधिकार का संगठन बनाया | जिसकी अनेकसी शाखाएँ खुल गई | हर संगठन, हर शाखा अपना-अपना कार्य निभाती थी | जैसे - गर्भपात सुधार, अनुपोषित शिशु देखभाल केंद्र, महिलाओं के लिए समान वेतन, महिलाओं की पेंशन में तरक्की और उनकी शिक्षा, राजनीतिक प्रभाव, आर्थिक सत्ता हासिल करने की क़ानूनी पद्धति इनको उजागर किया | यही लढाई स्त्री विमर्श के रूप मैं परिलक्षित होती हैं |

हिंदी काव्य में स्त्री विमर्श की शुरुवात छायावाद काल से मानी जाती है | जिसमें महादेवी वर्मा की श्रृंखला की कड़िया नारी सशक्तिकरण का सुन्दर उदहारण है जिसमें नारी जागरण एवं मुक्ति के सवाल को उठाया गया है | "ऐसा साहित्य जिसमें स्त्री समस्याओं का चित्रण हो 'स्त्री विमर्श' कहलाता है|" वैसे तो छायावाद से पहले भी स्त्री की समस्याओं को लिखने का प्रयास लिखने के साथ अन्य लेखकों ने भी किया था किन्तु उन्हें इतनी सफलता नहीं मिली जितनी स्त्री लेखिकाओं से मिली | नारी सशक्तिकरण १९६० से अधिक मुखरित हुआ | उषा प्रियंवदा , कृष्ण सोबती, मन्नू भंडारी एवं शिवानी इन लेखिकाओं ने स्त्री के मन

की अन्तर्दशा, अन्तर्द्वन्द्व को जाना - पहचाना और लिखना आरम्भ किया | जो लोगों के दिलों तक पहुँच गया |

विमर्श कोई सिद्धांत नहीं, यह एक निरन्तर चलनेवाली प्रक्रिया है, जो विमर्शित विषय को कई आयामों के माध्यम से किसी अभिलक्षित लक्ष्य तक पहुँचाने का कार्य करती है | स्त्री विमर्श का अर्थ है 'स्त्री' की परंपरागत 'छवि' और ' पहचान' से अलग नई 'पहचान' एक नई 'छवि' का निर्माण करना | स्त्री के अस्तित्व, उसके अधिकारों, उसकी अस्मिता उसके एक मानवीय इकाई रूप से प्रतिष्ठित होने के संघर्ष को 'स्त्री विमर्श' कहा जा सकता है | 'स्त्री विमर्श' स्त्री के 'स्त्री' होने की प्रक्रिया है, यह स्त्री होना ठीक उसी प्रकार का है जैसा कि पुरुष का पुरुष होना | 'स्त्री -विमर्श' समता और सामाजिक न्याय का विमर्श है | स्त्री - विमर्श हजारों वर्षो से चले आ रहे रूढ़ि - परंपरा, धार्मिक वर्जनाओ, जो स्त्री विरोधी स्त्री का दलन करनेवाले स्त्री को गुलाम बनाकर चार दीवारों में कैद करके रखनेवाली परंपरा का विरोध करनेवाली विचारधारा है |

हिंदी में पहला स्त्री काव्य संकलन १९०५ में मुंशी देवीप्रसाद ने ' मृदुवाणी' नाम से प्रकाशित करवाया | जिसमें लगभग ३५ कविताएँ शामिल थी | १९३३ मैं गिरिजादत्त शुक्ल और ब्रजभूषण शुक्ल ने 'हिंदी काव्य कोकिलाएँ', १९३८ में ज्योतिप्रसाद मिश्र ने निर्मल के प्रकाशन में 'स्त्री कवी संग्रह', १९८४ में नामवर सिंह ने हिंदी कथा लेखिकाओं की प्रतिनिधि कहानियाँ, १९८५ में रमणीला गुप्ता का आधुनिक महिला लेखन प्रसिद्ध रहा |

महिला लेखन की शुरुवात कविता से हुई जिसमें राष्ट्रीय भावना नजर आती हैं | साहित्य में विभिन्न रूपों में स्त्री परिभाषित हुई | धर्म और समाज से संबधित, त्याग की मूर्ति, अबला नारी इस प्रकार से उसे दर्शाया हैं | रचनाकर्म में जुटी हुई महिलाएं बड़े उत्साह के साथ आगे बढती नज़र आती हैं | साहित्यिक संगोष्ठियों में सहभागी रही, पत्रिकाओं का संपादन किया, महिलाएं राजनीतिक संगठनों से जुडी रही | इन लेखिकाओं की एक विशेषता थी - कथनी और करनी में समानता |

महादेवी के काव्य को रहस्यवादी तथा विरह वेदना का काव्य माना जाता हैं और यदि स्त्री की दृष्टी से उसका अध्ययन करते हैं तो स्त्री की स्वतंत्र पहचान का स्वर उनके काव्य में सुनाई देता हैं , ---

विस्तृत नभ का कोई कोना
मेरा न कभी अपना होना
परिचय इतना इतिहास यही
उमड़ी कली थी मिट आज चली
मैं नीर भरी दुःख की बदली [2]

आधुनिक काल के स्त्री लेखन में परिवार के साथ ही नौकरी करनेवाली स्त्रियों को भी शामिल किया गया | जिनमें मन्नू भंडारी, कृष्णा सोबती, उषा प्रियंवदा, ममता कालिया, मंजुला भगत, सुनीता जैन, मृणाल पांडे आदि उल्लेखनीय हैं |

वर्त्तमान स्थिति में कहानी, कविताओं के माध्यम से स्त्री का सामजिक जीवन और व्यक्तिगत जीवन से जुड़े प्रश्नों के साथ उसकी साहसिक अभिव्यक्ति चर्चा में आयी | स्त्री की आत्मकथा लेखन भी प्रचलित हुई | मैत्रेयी पुष्पा, अमृता प्रीतम, अजित कौर , मन्नू भंडारी, चित्रा मृदगल, प्रभा खेतान, नासिरा शर्मा इत्यादि लेखिकाओं ने स्त्रियों की समस्याओं पर लेखन अधिक मात्रा मैं किया |

सुप्रसिद्ध कवयित्री कात्यायनी की कुछ पक्तिया स्मरण होती है --

बेवकूफ़ जाहिल औरत !
कैसे कोई करेगा तेरा भला?
अमृता शेरगिल का तूने
नाम तक नहीं सुना
बमुश्किल तमाम बस इतना ही
जान सकी हो कि
इन्दिरा गाँधी इस मुल्क़ की रानी थीं।
(फिर भी तो तुम्हारे भीतर कोई प्रेरणा का संचार नहीं होता)
रह गई तू निपट गँवार की गँवार।
पी०टी० उषा को तो जानती तक नहीं
मार्गरेट अल्वा एक अजूबा है
तुम्हारे लिए।
'क ख ग घ' आता नहीं
'मानुषी' कैसे पढ़ेगी भला!
कैसे होगा तुम्हारा भला-

मैं तो परेशान हो उठता हूँ
आज़िज़ आ गया हूँ मैं तुमसे।
क्या करूँ मैं तुम्हारा?
हे ईश्वर !
मुझे ऐसी औरत क्यों नहीं दी
जिसका कुछ तो भला किया जा सकता
यह औरत तो बस भात राँध सकती है
और बच्चे जन सकती है
इसे भला कैसे मुक्त किया जा सकता है?[3]

आज परिस्थितियां बदल गयी हैं | आज औरतो के लिए कुछ सामाजिक बंधन भी कम हुआ हैं | कानून बदले हैं जिससे स्त्री को बराबरी का दर्जा मिला हैं | इन सब के बावजूद आज भी देश में न स्त्रियों को न सामान अधिकार हैं न पूरी आज़ादी हैं | इस सन्दर्भ मैं अर्चना वर्मा लिखती हैं कि, " समाज यूँ नहीं बदला करता , वचनों - प्रवचनों , विवादों और विचारधाराओ से | उसको बदलने के लिए महामारी, अकाल, भूकंप, बाढ़ जैसी विराट पैमाने की कोई प्राकृतिक आपदा या युद्ध जैसी मानव रचित दुर्घटना क्योंकि ऐसे ही समय में मनुष्य की चेतना सामुदायिक रूप से इतनी तत्पर, सतर्क और सम्बन्ध होती हैं की विचारों को शब्दों के घेरे से बाहर निकलकर कर्म में परिवर्तित कर दें |"[4]

निष्कर्षतः नारी कि समाज और परिवार में अहम् भूमिका है उसके बिना राष्ट्र कि उन्नति अधूरी है | नारी जागरण और नारी सशक्तिकरण के लिए उसे पुरुषों को भी सुसंस्कार देने होंगे, मर्यादित आचरण का महत्व तथा शिक्षा का महत्व देना होगा | 'उद्धरेत आत्मना आत्मानं ' इस महामंत्र को अपनाना होगा और विकास का मार्ग प्रशस्त करना होगा |

"नारी तुम केवल श्रद्धा हो, विकास रजत नाग पग ताल में |
पियूष स्त्रोत सी बहा करो जीवन के सुन्दर समताल में ||" (प्रसाद जी)

1. महादेवी वर्मा , यामा पृष्ठ ९५
2. महादेवी वर्मा, शृंखला की कड़ियाँ - पृष्ठ ७५
3. कात्यायनी, नहीं हो सकता तेरा भला
4. राजेंद्र यादव, अर्चना वर्मा, अतीत होती सदी और स्त्री का भविष्य पृष्ठ २०